इंद्रप्रस्थ उद्घोष
शिक्षा क्षेत्र की प्रतिनिधि पत्रिका
राष्ट्रीय छात्रशक्ति

# राष्ट्रीय छात्रशक्ति

अमृत महोत्सव वर्ष राष्ट्रीय अधिवेशन 7 से 10 दिसंबर 2023 दिल्ली
अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद

दिल्ली | शनिवार | 9 दिसंबर, 2023 विक्रम संवत् 2080 | मार्गशीर्ष द्वादशी | शक संवत् 1945

## अग्र लेख

### संकल्पों के दीप

विश्व में भारत को सर्वप्रथम बनाने का संकल्प दिलाते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने परिषद कार्यकर्ताओं से कहा कि अमृत काल में देश का नेतृत्व संभालने जा रही इस वर्तमान पीढ़ी का दायित्व है कि इस संकल्प को सिद्धि तक पहुचाएं। इसके लिये कोई नया चिंतन नहीं करना है।

1925 में हमारे पूर्वजों ने दिशा भी निश्चित कर दी और कालक्रम में इसकी कार्यपद्धति भी विकसित हो गई। युवाओं की वर्तमान पीढ़ी को केवल अपने कर्तव्य का प्रदर्शन करना है और भारत को विश्वपटल पर उसका यथोचित स्थान दिलाना है। परिषद के लिए यह संकल्प भी नया नहीं है। मुंबई में 1998 में सम्पन्न स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन में पारित स्वर्ण संकल्प का भी यही सार था। चाहे लगभग एक शताब्दी पूर्व संघ द्वारा प्रस्तुत चिंतन हो अथवा 1949 में परिषद की स्थापना के पीछे का मंतव्य, भाव भारत को समर्थ बनाने का ही था।

यही संकल्प लेकर कार्यकर्ताओं की मालिका खड़ी हुई, जिसने अपने अनुभवों और भारतीय समाज की आत्मा की पहचान के आधार पर अपनी कार्यपद्धति गढ़ी। निश्चय ही यह पद्धति समय की कसौटी पर खरी सिद्ध हुई है।

परिषद कार्यकर्ताओं की प्रत्येक पीढ़ी ने अपने समय की चुनौतियों को सामने रख कर कुछ संकल्प लिए और उनके समाधान तक उन पर निरन्तर प्रयास किया। लोकतंत्र की रक्षा के लिए आपातकाल के विरुद्ध संघर्ष ऐसा ही था। दमन के विरुद्ध परिषद कार्यकर्ताओं ने सत्याग्रह के द्वारा और भूमिगत रह कर भी, देश को खड़ा किया और सत्ता परिवर्तन की स्वाभाविक परिणति तक उसे पहुंचाया।

स्वर्ण जयन्ती अधिवेशन के उदघाटन समारम्भ में मुख्य अतिथि के रूप में पधारे तत्कालीन रक्षामंत्री जॉर्ज फ़र्नान्डिस ने उस परिस्थिति का स्मरण करते हुए कहा कि आपातकाल लगते ही सभी विपक्षी राजनेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया था। जेलों में बंद वह लोग यह मान चुके थे कि नेतृत्वविहीन देश इसके विरुद्ध लड़ नहीं सकेगा, जिसके परिणामस्वरूप हमेशा के लिए जेलों में बंदी बन कर रहना उनकी नियति है। उन्होंने स्पष्ट रूप से स्वीकार किया कि वह यह सोच भी नहीं सकते थे कि देश के छात्र-युवा बिना राजनीतिक नेतृत्व के अपने बल पर संघर्ष को इतनी तीव्रता दे सकेंगे कि सत्ता की तानाशाही को चुनौती दे दें। स्वर्गीय श्री फ़र्नान्डिस ने स्वीकार किया कि उनका भय गलत था और देश के युवाओं ने जो कर दिखाया, वह अकल्पनीय था।

कुछ मांगें और कुछ संकल्प ऐसे भी थे, जिन्हें पूरा करने में लम्बा समय लगा। कार्यकर्ताओं की पीढ़ियां आती और जाती रहीं परन्तु संकल्प बना रहा, प्रयास जारी रहा। 18 वर्ष पर मताधिकार की मांग ऐसी ही थी जिसे पूरा होने में दशकों लगे। शिक्षा में भारतीयता, शिक्षा पर बजट का दस प्रतिशत खर्च, स्वायत्त शिक्षा पीठ आदि ऐसी मांगें हैं जो पूर्ति के निकट पहुंची हैं, किन्तु पूरी हो गई हैं, यह आज भी नहीं कहा जा सकता। ऐसे ही अन्य अनेकों संकल्प हैं जो अपनी अंतिम परिणति की ओर बढ़ रहे हैं।

संकल्प के यह दीप निरंतर ज्योतित रहेंगे और कार्यकर्ताओं के पथ को आलोकित करते रहेंगे।

**संपादक**
आशुतोष भटनागर

**संपादक–मण्डल**
संजीव कुमार सिन्हा
अवनीश सिंह
अभिषेक रंजन
अजीत कुमार सिंह
उत्कर्ष श्रीवास्तव

# अभाविप के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का औपचारिक उद्घाटन

# राष्ट्र पुनर्निर्माण का आंदोलन है अभाविप : अमित शाह

**संजय दीक्षित**

दिल्ली. 8 दिसम्बर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का औपचारिक उद्घाटन आज गृहमंत्री अमित शाह ने किया। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्व सहसरकार्यवाह एवं अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री स्वर्गीय मदनदास देवी की स्मृति में बनाए गए सभागार में हुए औपचारिक उद्घाटन समारोह में अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही, राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल, राष्ट्रीय मंत्री अंकिता पवार, अधिवेशन की स्वागत समिति अध्यक्ष निर्मल कुमार मिंडा, दिल्ली प्रान्त अध्यक्ष अभिषेक टंडन, दिल्ली प्रान्त मंत्री हर्ष अत्री, स्वागत समिति महामंत्री आशीष सूद सहित संघ के कई पदाधिकारी, केंद्र सरकार के मंत्री, भाजपा सांसद एवं कई देशों के राजदूतों के साथ ही अभाविप के आठ हजार से अधिक कार्यकर्ता उपस्थित थे।

दीप प्रज्वलन के साथ अधिवेशन के औपचारिक उद्घाटन के बाद अपने सम्बोधन में गृहमंत्री अमित शाह ने विश्व के सबसे बड़े संगठन अभाविप को बधाई देते हुए कहा कि अभाविप के अमृत वर्ष अधिवेशन में हिस्सा लेना, उनके लिए आनंद का विषय है। यह अधिवेशन इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि इसका आयोजन अभाविप के अमृत वर्ष में किया जा रहा है। साथ ही यह भारत की स्वतंत्रता के अमृत काल में प्रवेश करने वाला अधिवेशन भी है। देश ने जब अमृत वर्ष को मनाया तो विश्व ने भी भारत का लोहा माना। अमृत काल में भारत की संस्कृति को गौरव दिलाने के हो रहे प्रयास को सभी देख रहे हैं। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने आगामी पच्चीस वर्ष के लिए युवाओं का आह्वान करते हुए संकल्प लिया है कि भारत आने वाले समय में सबसे महान राष्ट्र बने।

गृहमंत्री अमित शाह ने सभागार में उपस्थित कार्यकर्ताओं से कहा कि अभाविप के उद्देश्य को पूरा करने का कार्य छात्र ही कर सकते हैं। अभाविप की व्यवस्था इतनी मजबूत हैं कि न तो रास्ता भटक सकता है और न ही सरकार-समाज को भटकने दिया है। ज्ञान, शील, एकता के मंत्र के साथ एक पथ का निर्माण करके हर चुनौतियों से संघर्ष करने वाले अभाविप का इतिहास स्वर्णिम अक्षरों से लिखा जाएगा। संघ के पूर्व सहसरकार्यवाह एवं अभाविप के पूर्व राष्ट्रीय संगठन मंत्री स्वर्गीय मदनदास देवी की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि स्वर्गीय मदन दास देवी ने छोटे-छोटे कार्यकर्ताओं को राह दिखाने का कार्य किया। प्रा. यशवंत राव केलकर, बाल आप्टे, दत्ताजी डिडोलकर, नारायण राव भंडारी जैसे लोगों ने देशभर के छात्रों को अभाविप से जोड़ा। उन सभी को प्रणाम करता हूं। 1949 से लेकर 2023 तक की यात्रा देश के विकास के साथ जुडी हुई है। अभाविप ने युवाओं के माध्यम से शिक्षा और संस्कृति से स्व का विचार बताया। देश के हर क्षेत्र में अभाविप की सुगंध मिलेगी और जो भी श्रेष्ठ कर रहा है, वह कहीं न कहीं अभाविप से जुड़ा है।

गृहमंत्री शाह ने कहा कि अब ऐसा समय है, जब संघर्ष नहीं, बल्कि काम करने की आवश्यकता है। युवाओं की ऊर्जा को रचनात्मक उपयोग करके राष्ट्र को पूर्ण विकसित करने के लिए कार्य करना होगा। अब जान देने की नहीं, जीने की जरूरत है। अभाविप कार्यकर्ताओं को यह संकल्प लेना चाहिए कि 2047 में जब अपनी स्वतंत्रता की शताब्दी मनाएगा, उस समय भारत हर क्षेत्र में प्रथम और विश्व में सबसे आगे होगा। भारत ने छह सौ वर्षों तक संघर्ष करने के बाद जो स्वतंत्रता हासिल की, उसके हुतात्माओं की कल्पना का भारत बनाना अभाविप और युवाओं का दायित्व है।

छत्रपति शिवाजी महाराज के राज्याभिषेक की 350वीं वर्षगांठ की चर्चा करते हुए गृहमंत्री अमित शाह ने कहा कि शिवाजी महाराज का उद्देश्य स्वराज की स्थापना था और उन्होंने हर क्षेत्र में 'स्व' की स्थापना की थी। देश के युवाओं को यह बताने का बीड़ा अभाविप ने उठाया है। देश का स्वर्णिम भविष्य युवाओं की राह देख रहा है। पिछले दस वर्षों में प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में बड़ा परिवर्तन हुआ है, नई नीतियां बनी हैं और तुष्टिकरण-परिवारवाद और भ्रष्टाचार की समाप्ति हुई है। आर्थिक दृष्टि से जो भारत ग्यारहवें स्थान पर था, वह पांचवें स्थान पर आ चुका है। कश्मीर से लेकर उत्तर-पूर्व के साथ ही वामपंथी उग्रवाद समाप्ति की दिशा में है और हिंसा में सत्तर प्रतिशत की कमी हुई है। शासन ऐसे हाथों में है, जो विचारधारा के लिए काम कर रहे हैं। गत 75 वर्षों में अभाविप की पीढ़ी ने ज्ञान-शील-एकता के रास्ते को बनाए रखा है और हम सभी को उसी पर चलना है। भारत का समय आ गया है। पूरा विश्व आशा के साथ देख रहा है। ऐसे में परिवर्तन की सात्विकता को बनाए रखते हुए भारत को आगे बढ़ाना है।

पिछले दस वर्षों के दौरान भारत द्वारा हासिल की गई उपलब्धियों को आंकड़ों के साथ रखते हुए गृहमंत्री शाह ने कहा कि मोदी सरकार ने सांस्कृतिक विकास को संजोकर आधुनिकता के साथ कार्य किया है। अयोध्या में श्रीराम मंदिर के निर्माण की कल्पना किसी ने नहीं की थी। हमारे एक वरिष्ठ नेता ने प्रण किया था कि जब तक मंदिर का निर्माण नहीं होगा, वह मीठा नहीं खाएंगे। आगामी 22 जनवरी को उन्हें अब मीठा खाने को मिलेगा। इसी तरह काशी में विश्वनाथ कॉरिडोर, बद्रीनाथ, केदारनाथ के पुनर्निर्माण को अब सभी देख रहे हैं। इसी तरह उच्च शिक्षा अपनी भाषा में लेने की उपलब्धि भी आप सभी के सामने है। उन्होंने कहा कि ज्ञान-शील-एकता के पथ पर चलते हुए अभाविप ने लाखों अच्छे नागरिक देश को दिए हैं। अभाविप एक संस्था नहीं है, बल्कि राष्ट्र पुनर्निर्माण का आंदोलन है। अधिवेशन में आए युवा यह संकल्प लेकर जाएं कि भारत को हर क्षेत्र में प्रथम बनाना है। नींव ढल चुकी है और अब ईमारत बनाना बाकी है। इसके साथ ही अभाविप कार्यकर्ता आगामी 22 जनवरी को अयोध्या जाकर श्रीराम के भव्य मंदिर को देखें।

उद्घाटन समारोह को सम्बोधित करते हुए अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही ने कहा कि दुनिया के अनेक संगठन काल के प्रवाह के साथ अपनी प्रासंगिकता खोते जा रहे हैं, लेकिन ध्येय के साथ निष्ठ कार्यकर्ता वाला अभाविप छात्र संगठन लगातार बढ़ता चला जा रहा है। 75 वर्ष की यात्रा में अभाविप ने प्रश्न के साथ समाधान भी दिए हैं। 1948 में अभाविप ने ज्ञान-शील-एकता का सिद्धांत दिया और शिक्षा प्रभाव उत्पन्न करने की प्रक्रिया बने, यह अभाविप का प्रयास है। अभाविप यह प्रयास कर रही है कि शिक्षा का ढांचा संस्कृति के अनुरूप खड़ा हो और छात्र को सेवा एवं विकास से जोड़ा जाए। विश्व में भारत के विषय में धारणा बदली है और पूरा विश्व भारत के युवाओं को देखकर आशान्वित है। अभाविप की यात्रा सत्ता परिवर्तन की यात्रा नहीं है, बल्कि यह व्यक्तित्व निर्माण, छात्र का रचनात्मक विकास और छात्र शक्ति को राष्ट्र शक्ति में बदलने का अभियान है अभाविप।

अभाविप के राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने अपने सम्बोधन में अभाविप को एक ऐसा आंदोलन बताया जो देश में सकारात्मक परिवर्तन लाने की दिशा में काम कर रहा है। उन्होंने कहा कि अभाविप ने सकारात्मक आंदोलन की पूरी श्रृंखला खड़ी की है, जिसने परिवर्तन का काम किया है। अभाविप का यह प्रयास है कि हर व्यक्ति को न्याय मिले। अभाविप की सदस्यता पचास लाख से अधिक होने पर उन्होंने कहा कि यह युवाओं का अभाविप के प्रति सहज-स्वाभाविक प्रेम है, जिससे अभाविप विश्व का सबसे बड़ा छात्र संगठन बन गया है।

उद्घाटन अवसर पर स्वागत समिति के अध्यक्ष निर्मल मिंडा ने अभाविप की प्रगति पर हर्ष व्यक्त करते हुए कहा कि 1949 से सामाजिक हित के लिए काम कर रहे अभाविप के अमृत महोत्सव वर्ष में आयोजित अधिवेशन में देश के हर राज्य के विद्यार्थी अपने-अपने राज्यों का प्रतिनिधित्व कर रहे हैं। स्वतंत्रता के बाद भारत की सम्पूर्ण आर्थिक-सामाजिक प्रगति में युवाओं की बड़ी भूमिका रही है। भारत के पास अनंत शक्ति है, जिसमें युवा शक्ति भविष्य के लिए बड़ी शक्ति है। हम सभी को संकल्प लेना चाहिए कि हर कोई भारत के विकास के लिए कार्य करते हुए अपना योगदान आगे बढ़कर करेगा। उद्घाटन समारोह में औपचारिक धन्यवाद स्वागत समिति के महामंत्री आशीष सूद ने दिया, जबकि संचालन निधि त्रिपाठी ने किया।

### स्वयं को अभाविप का 'आर्गेनिक प्रोडक्ट' बताया अमित शाह ने

राष्ट्रीय अधिवेशन में गृहमंत्री अमित शाह बेहद भावुक दिखाई दिए। उन्होंने कहा कि वह आज राष्ट्रीय अधिवेशन के मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित होकर कितना गौरवान्वित महसूस कर रहा है, यह वह नहीं बता सकते। यह अनुभव वही व्यक्ति कर सकता है, जिसकी शुरुआत राजकोट अधिवेशन में पंडाल के अंत में बैठकर हुई और आज वह मुख्य अतिथि बनकर यहां खड़ा है। वह स्वयं अभाविप के आर्गेनिक प्रोडक्ट हैं।

### अभाविप कार्यकर्ताओं की पुस्तकों का विमोचन

अभाविप अधिवेशन में गृहमंत्री अमित शाह ने चार पुस्तकों का विमोचन भी किया। यह पुस्तकें अभाविप कार्यकर्ताओं द्वारा लिखी गई है। गृहमंत्री अमित शाह ने जिन चार पुस्तकों का विमोचन किया, उनमें अरुंधति सिंह की पुस्तक शिवकामिनी महादेवी अहिल्याबाई होल्कर, ऐश्वर्य पुरोहित की पुस्तक स्वाधीनता के स्वर, डा. मुकेश कुमार की पुस्तक जनजातीय संस्कृति की समृद्ध परम्पराएं एवं आनंद कुमार सिंह की पुस्तक भारतीय ज्ञान परंपरा शामिल है।

# प्रेरित कर रहा है गुरु वशिष्ठ का चित्र

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के अधिवेशन स्थल पर लगाए गए चित्रों में एक चित्र में गुरु वशिष्ठ को दर्शाया गया है, जो राजकुमारों को शिक्षा दे रहे हैं। यह चित्र अत्यंत सुंदर और प्रेरणादायक होने के साथ ही यह बताता है कि शिक्षा का महत्व क्या है और छात्रों को शिक्षा क्यों ग्रहण करनी चाहिए?

चित्र में एक शांत और सुंदर सरोवर के किनारे गुरु वशिष्ठ पेड़ के नीचे बैठे हैं और उनके सामने एक चौकी पर चार राजकुमार बैठे हुए हैं, जिन्हें गुरु वशिष्ठ शिक्षा दे रहे हैं।

जिन राजकुमारों को वह शिक्षा दे रहे हैं, उनमें श्रीराम, लक्ष्मण, भरत और शत्रुघन शामिल हैं। यह सभी राजा दशरथ के पुत्र थे। गुरु वशिष्ठ राजकुमारों को वेद, शास्त्र, धर्मनीति और शास्त्रीय काल का ज्ञान दे रहे हैं, जिसे चारों राजकुमार ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं। चित्र को देखने और उसके साथ फोटो लेने के लिए अभाविप कार्यकर्ताओं की रोजाना भीड़ जुट रही है।

# त्रिपुरा-नेपाल के स्टाल आकर्षित कर रहे हैं अभाविप कार्यकर्ताओं को

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में अलग-अलग राज्यों से आए हुए लोग अपने-अपने राज्य की संस्कृति को अपनी वेशभूषा के द्वारा प्रदर्शित कर रहे हैं। विशेष रूप से त्रिपुरा तथा नेपाल की प्रदर्शनी ने लोगों का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया है। केवल वेशभूषा ने ही नहीं, बल्कि प्रदर्शनी में उनके द्वारा बनाई गई वस्तुएं भी कार्यकर्ताओं का ध्यान आकर्षित कर रही हैं। इनमें त्रिपुरा के निवासियों द्वारा उपयोग में ना आने वाली वस्तुओं से बनाई गई वस्तुएं भी शामिल हैं। इनमें पानी पीने की बोतल, सजावट का सामान, जूट के कपड़ों पर बनाई गई कलाकृतियां तथा सजावट के लिए प्रयोग किए जाने वाले जहाज शामिल हैं। त्रिपुरा के निवासियों ने बताया कि यह वस्तुएं त्रिपुरा के सिंधु एवं अगरतला में स्थानीय निवासियों द्वारा अपने ही घरों में बनाई जाती हैं। इसी कारण सिंधु एवं अगरतला के लोगों को रोजगार के लिए अपने घरों को छोड़कर किसी अन्य राज्य में नहीं जाना पड़ता है। इसी तरह नेपाल के निवासियों द्वारा प्रदर्शनी में ढाका के कपड़ों से बनी टोपी,-मफलर एवं रुद्राक्ष से बनी मालाएं प्रदर्शित की गई हैं। स्टाल पर बैठे कार्यकर्ता बताते हैं कि ढाका के कपड़े की यह विशेषता है कि यह केवल नेपाल में ही मिलता है।

# अभाविप कार्यकर्ताओं की दृष्टि में राष्ट्रीय अधिवेशन

**चाऊ तेवा मनंगा**
**अरुणाचल प्रदेश**

यह मेरा पहला अधिवेशन हैं। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद से मेरा जुड़ाव 2018 से हुआ। अपने शैक्षणिक कार्य में व्यस्त रहने के कारण पहले हुए अधिवेशन में मेरा आना नहीं हो पाया। अबकी बार मौका मिला है और मुझे ऐसा लगता है कि अधिवेशन के माध्यम से हम अलग-अलग प्रांतों के लोगों से मिलने, उनसे जुड़ने और उनसे मित्रता करने का अवसर मिला और उनसे मैत्रिक संबन्ध बने। यह अच्छा लगा कि हमें भी इतने बड़े अधिवेशन में आने का अवसर मिला है और एक कार्यकर्ता के रूप में इस अधिवेशन से जुड़े हैं। अधिवेशन की व्यवस्था टीम को मैं धन्यवाद देना चाहूंगा क्योंकि उन्होंने अधिवेशन को भव्य बनाया है। दिल्ली के इंद्रप्रस्थ नगर में आयोजित राष्ट्रीय अधिवेशन में आना मेरे लिए गर्व का विषय है।

**प्रियांशु सूर्या**
**पंजाब**

यह मेरा पहला राष्ट्रीय अधिवेशन हैं। मेरे लिए यह बहुत अच्छा अनुभव है। यहां पर बहुत अच्छी व्यवस्था हैं। अधिवेशन के माध्यम से विभिन्न राज्य के लोगों से मिलने का मौका मिल रहा है। साथ ही उनकी संस्कृति को समझने का भी अवसर मिला है। अधिवेशन में मैंने अनेक प्रांतों के नए-नए मित्र बनाए है। अधिवेशन के माध्यम से यह बात आसानी से समझ आ रही है कि अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद किस प्रकार एक व्यक्ति का निर्माण करता है और किस प्रकार विद्यार्थियों में राष्ट्रीय हित की भावना को पैदा करता है। अधिवेशन में पूरे भारत को बड़ी आसानी के साथ समझा जा सकता है।

**रजत**
**मेरठ**

राष्ट्रीय अधिवेशन को लेकर पहले से ही बहुत उत्साहित था। यहां आकर मेरा मन बहुत प्रफुल्लित हो गया है। अधिवेशन में आकर औरअलग-अलग संस्कृति के कार्यकर्ताओं के साथ रहकर उनकी संस्कृति, खान-पान और उनकी भाषा से परिचित हो रहा हूं। सिर्फ यही कहूंगा कि राष्ट्रीय अधिवेशन में आना बहुत अच्छा रहा है और यहां बहुत सीखने और जानने के लिए मिल रहा है। आशा है कि भविष्य में भी राष्ट्रीय अधिवेशन में हिस्सा लेने का अवसर मिलेगा। अधिवेशन की सम्पूर्ण व्यवस्था बहुत अच्छी और कार्यकर्ता के अनुकूल हैं। यहां समाजिक जीवन से अलग अनुशासन के साथ रहने का अनुभव मिल रहा है, जो भविष्य में मेरा बहुत काम आएगा।

**राधे धर**
**जोधपुर**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में आना मेरे लिए सौभाग्य की बात है। यहां पर इतनी बड़ी भव्य व्यवस्था करके इतना भव्य और बड़ा पंडाल सजाना, भोजन की व्यवस्था करना और 44 प्रांत से कार्यकर्ताओं का अधिवेशन में हिस्सा लेना एवं उनके लिए सभी सुख-सुविधा की व्यवस्था करने के लिए मैं सभी का धन्यवाद देता हूं।

**अनामिका रंभा**
**असम**

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन की साज-सज्जा बहुत अच्छी है। इतने बड़े स्तर पर अधिवेशन का आयोजन करना बहुत बड़ी बात हैं क्योंकि यहां पर लगभग दस हजार कार्यकर्ता हिस्सा ले रहे है और उन्हें अनुशासन के साथ रखना बड़ी बात है। अधिवेशन स्थल पर समय-समय पर कार्य सम्बन्धी सूचना मिलती रहती है। जैसे- कब नहाना है, कब खाना खाना है। कुल मिलकर यह सब बहुत ही व्यवस्थित तरीके से हो रहा है। इसके अलावा यहां हर कार्य एक निर्धारित समय पर ही किया जा रहा है। देश के विभिन्न प्रांतों से आए कार्यकर्ताओं और उनकी अपनी संस्कृति को देखने के बाद ऐसा लगता है कि हम लघु भारत को यहां देख रहे हैं। भविष्य में भी अभाविप के अधिवेशन में जाने का अवसर मिलेगा, ऐसा हमें विश्वास है।

**अर्पित**
**तमिलनाडु**

मैं उत्तरी तमिलनाडु से अधिवेशन में हिस्सा लेने के लिए आया हूं। इस महाधिवेशन में अपनी सहभागिता करना मेरे लिए बहुत ही कठिन सफर था। उत्तरी तमिलनाडु में तूफान के कारण मैं 7 दिसंबर की जगह 8 दिसंबर की सुबह यहां पहुंच पाए। अधिवेशन की लिए हमारी पूरी यात्रा काफी संघर्षपूर्ण रही। इसके बावजूद सभी चुनौतियों का सामना करते हुए अधिवेशन में आए हैं। हमारे सभी कार्यकर्ता अधिवेशन में हिस्सा लेने के लिए बहुत उत्साहित थे। आज का उद्घाटन सत्र हमने देखा और गृहमंत्री अमित शाह के विचार सुने। इससे मेरे सभी साथियों का उत्साह बढ़ा हैं और मनोबल और अधिक हो गया हैं।

**आकर्ष**
**कानपुर**

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वां अधिवेशन एक बड़ा आयोजन है। यहां की व्यवस्था में ग्यारह सौ से अधिक कार्यकर्ता लगे हुए हैं। अधिवेशन स्थल की स्वच्छता और यहां का वातावरण एक अलग ही अनुभव दे रहा है। अधिवेशन में स्वास्थ्य सुविधा का बहुत ही अच्छी हैं। मेरे पैर में कील लग गई थी तो मेडिकल टीम ने तुरंत मेरा उपचार किया। इसके साथ ही यहां सामान भी बहुत सुरक्षित हैं। हम जहां कहीं अपना समान रख कर जाते हैं, वह समान हमें वही पर मिलता हैं। सभी व्यवस्थाओं के लिए अधिवेशन के आयोजक को साधुवाद।

**विवेक**
**ब्रज प्रांत**

राष्ट्रीय अधिवेशन हम सब विद्यार्थियों के लिए एक त्यौहार जैसा होता हैं और हम हर वर्ष इसे बड़ी धूमधाम से मनाते हैं। अबकी बार अधिवेशन में दत्ताजी डिडोलकर की प्रदर्शनी हैं, जिसमें हमारे कार्यकर्ताओं ने अपने हाथों से चित्रकला बनाई हैं, जो प्रदर्शनी के अंदर लगाई गई हैं। मेरे हिसाब से यह अधिवेशन अब तक का सबसे बड़ा अधिवेशन है। अधिवेशन ने कन्याकुमारी से कश्मीर तक को एक धागे में बांध दिया है। अन्न की बर्बादी कम हो, इसके लिए सभी से जीरो फ़ूड वेस्टेज का आह्वाहन बार-बार किया जा रहा है। अधिवेशन के लिए मेरा दिल्लीवासियों को बहुत-बहुत धन्यवाद।

**अभय तिवारी**
**अवध**

मैं राष्ट्रीय अधिवेशन में आकर गौरव महसूस कर रहा हूं। 69वां राष्ट्रीय अधिवेशन का बहुत ही भव्य और दिव्य ढंग से आयोजित किया जा रहा है। हम सब देख सकते हैं कि देश के कोने-कोने से युवा साथी एवं विदेश से आए युवा हमारे अधिवेशन का हिस्सा बन रहे हैं। इसके माध्यम से हम सभी देश और विदेश के विद्यार्थियों को अभाविप की ताकत दिखा सकते हैं।

**वीरेंद्र पंजलू**
**हिमाचल प्रदेश**

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में आकर हमको बहुत अच्छा और सुखद महसूस हो रहा है। व्यवस्था इतनी सही है कि दस हजार छात्र शक्ति को किसी भी तरह की कमी नहीं लग रही है। सब कुछ सुचारु रूप से चल रहा है। आज गृहमंत्री अमित शाह आए थे और उन्होंने अपने सम्बोधन में जो कुछ बोलै, वह काफी प्रेरणादायक था। इससे हम युवाओं को प्रेरणा मिली है,जो भविष्य में हमारे बहुत काम आएगी।

**हर्षवर्धन**
**मणिपुर**

अभाविप के राष्ट्रीय अधिवेशन में आकर आहूत अच्छा लगा। साडी तैयारियां और सांस्कृतिक आकृतियों को देख कर मन बहुत प्रफुल्लित हुआ। राष्ट्रीय अधिवेशन के माध्यम से हमें देश की अलग-अलग संस्कृति से जुड़ने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। दूसरे प्रान्त के साथियों के साथ मिलकर अच्छा लगा और सीखने का अवसर मिला, इसके लिए मै अभाविप के सभी पदाधिकारियों को धन्यवाद देता हूं।

**युति प्रदीप गजरे**
**गुजरात**

इंद्रप्रस्थ में जो राष्ट्रीय अधिवेशन हो रहा है, वह बहुत ही भव्य है। अखिल भारतीय विधार्थी परिषद के 69वें अधिवेशन में हिस्सा लेने का हमें सौभाग्य मिल रहा हैं। यहां बहुत ही सुंदर व्यवस्था की गई हैं। मुझे याद है कि मैंने पहली बार जब अभाविप के अधिवेशन में हिस्सा लिया था, तो मुझे भी व्यवस्था में कार्य करने का अवसर मिला था। वह सारी यादे आज वापस आ रही हैं। अबकी बार इतनी अच्छी प्रदर्शनी लगी हैं, उसे देखकर सभी को हर्ष महसूस हो रहा हैं। इस बार अधिवेशन का मंच बहुत ही आकर्षण का केंद्र है।

प्रस्तुति : केशव ओझा

# अभाविप के पुनर्निर्वाचित अध्यक्ष एवं महामंत्री द्वारा नए कार्यकाल हेतु दायित्व ग्रहण

दिल्ली, 8 दिसंबर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें अधिवेशन में आज अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही और राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने अपना दायित्व ग्रहण कर लिया। दोनों राष्ट्रीय पदाधिकारियों का नया कार्यकाल 2024 तक होगा।

जानकारी हो कि गत नवम्बर माह में दोनों राष्ट्रीय पदाधिकारियों को एक वर्ष कार्यकाल के लिए पुनः निर्वाचित किया गया है। पुनः निर्वाचन के बाद राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही एवं राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल ने अपने दायित्व को संभाल लिया है।

अभाविप के राष्ट्रीय अध्यक्ष डा. राजशरण शाही मूलतः उत्तर प्रदेश के गोरखपुर के निवासी हैं। शिक्षाशास्त्र में पीएचडी करने वाले डा. शाही वर्तमान में लखनऊ स्थित बाबासाहब भीमराव अंबेडकर विश्वविद्यालय के शिक्षाशास्त्र विभाग में सह-आचार्य के पद पर कार्यरत हैं। उन्होंने अब तक छह पुस्तकों का लेखन एवं संपादन किया है और 109 से अधिक शोधपत्र एवं लेख राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिकाओं एवं संगोष्ठियों में रखे जा चुके हैं। वह शिमला स्थित प्रतिष्ठित भारतीय उच्च अध्ययन संस्थान में एसोसिएट भी रहे हैं। 2017 में उन्हें श्रेष्ठतम शिक्षक का योगीराज बाबा गंभीरनाथ स्वर्ण पदक मिला था। वह उत्तर प्रदेश की विभिन्न शैक्षिक एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति के क्रियान्वयन संबन्धी महत्वपूर्ण समितियों के सदस्य भी हैं। शिक्षा व सामाजिक विषयों के गहन चिंतक व उत्तर प्रदेश में संगठन कार्य को आगे बढ़ाने में उनकी महती भूमिका रही है। वह 1989 में विद्यार्थी जीवन से अभाविप से जुड़े हुए है। साथ ही शिक्षक कार्यकर्ता के रूप में गोरखपुर महानगर अध्यक्ष से लेकर गोरक्ष प्रांत अध्यक्ष तथा राष्ट्रीय उपाध्यक्ष आदि दायित्वों का निर्वहन कर चुके है।

राष्ट्रीय महामंत्री याज्ञवल्क्य शुक्ल मूलतः झारखंड के गढ़वा जिले के निवासी हैं। उनकी शिक्षा रांची विश्वविद्यालय से हुई है और उन्होंने भूगोल विषय में पीएचडी की है। इनका शोध झारखंड के पलामू प्रमंडल में कोरबा जनजाति का सांस्कृतिक भूगोलीय अध्ययन विषय पर हुआ है। नीलाम्बर-जीताम्बर विश्वविद्यालय से भूगोल विषय में परास्नातक में स्वर्ण पदक प्राप्त करने वाले याज्ञवल्क्य श्रीजगजीत सिंह नामधारी महाविद्यालय (गढ़वा) के निर्वाचित छात्रसंघ अध्यक्ष तथा रांची विश्वविद्यालय के निर्वाचित छात्रसंघ उपाध्यक्ष भी रह चुके हैं। 2018 में उन्होंने केंद्र सरकार द्वारा आयोजित भारतीय युवा प्रतिनिधिमंडल की श्रीलंका यात्रा में भी प्रतिनिधित्व किया। विद्यालय जीवन से ही अभाविप के संपर्क में आने के बाद वह 2009 से पूर्णकालिक कार्यकर्ता हैं। झारखंड के युवाओं को भ्रमित करने वाले षड्यंत्रों को परास्त कर उन्होंने 'जुटान' जैसे विभिन्न सफल प्रयोगों से जनजातीय विद्यार्थियों को अवसर प्रदान करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। साथ ही रांची महानगर संगठन मंत्री, झारखंड प्रांत संगठन मंत्री, केंद्रीय कार्यसमिति सदस्य तथा बिहार क्षेत्र के क्षेत्रीय सह संगठन मंत्री जैसे महत्वपूर्ण दायित्वों का निर्वहन भी उन्होंने किया है।

## गृहमंत्री अमित शाह ने जारी किया अभाविप का थीम सांग

दिल्ली, 8 दिसम्बर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन सत्र में अधिवेशन का थीम सांग जारी किया गया। गृहमंत्री अमित शाह द्वारा जारी किए गए थीम सांग के बोल बोल जागीरदार आरवी और पुष्कर राज तिवारी ने लिखे हैं और इसे रविंद्र उपाध्याय ने अपने एक सहयोगी के साथ मिलकर गाया है। थीम सांग में अभाविप की विकास यात्रा को बताया गया है। युवाओं में जोश पैदा करने वाले थीम सांग कुछ इस तरह से है-

ज्यो कठिन शिला चिंगारी से
पड़ते हम तेज कटारी से
नभ ध्वज केसरिया लहराए
पौधे बलिदान की क्यारी के
जली मशाल सन् 49 में युवाओं की आंधी निकली
भारत माता के नारों से गूंज उठी अंबर धरती
छात्रशक्ति है राष्ट्रशक्ति, ये सबको पाठ सिखाती है
युवा वर्ग को राष्ट्र धर्म का मार्ग दिखाती
एबीवीपी... एबीवीपी... राष्ट्र प्रेम भारत भक्ति
एबीवीपी... एबीवीपी...राष्ट्र धर्म की है नीति
ले तप्त तवे सा तापमान ये रक्त उफनता युवा है
नापे एक क्षण में आसमान ये गगन उमंग से छुआ है
अब इंद्रप्रस्थ की भूमि पर है आयोजन अधिवेशन का
अवसर लघु भारत के दर्शन और नवऊर्जा संयोजन का
महाराणा के वंशज है हम
शिव छत्रपति के है मावले
मातृभूमि की रक्षा को
मैदान खड़े हम कमर बांध के
पृथ्वीराज सा शोर्य लिए
सूरजमल जी सा तेज साथ में
दुर्गावती और मिहिरभोज
के नाम से आता ओज ललाट पे
एबीवीपी... एबीवीपी... राष्ट्र प्रेम भारत भक्ति
एबीवीपी... एबीवीपी...राष्ट्र धर्म की है नीति
एबीवीपी... एबीवीपी... राष्ट्र प्रेम भारत भक्ति
एबीवीपी... एबीवीपी...राष्ट्र धर्म की है नीति

## अभाविप का उद्देश्य राज करना नहीं बल्कि समाज बदलना है : आशीष चौहान

दिल्ली, 8 दिसंबर। अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में 'क्रांतिकारी छात्र आंदोलन' विषय पर अपने विचार रखते हुए अभाविप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री आशीष चौहान ने कहा कि समाज क्षेत्र में कई संगठन बने, लेकिन कालांतर में वह कई टुकड़ों में विभाजित हो गए। लेकिन विचारों की प्रतिबद्धता और चरित्रवान विद्यार्थी निर्माण का काम करने वाली अभाविप 75 वर्ष बाद भी मजबूती से विस्तृत होती जा रही है। 75 वर्ष की यह यात्रा कोई समान्य यात्रा नहीं रही है।

अभाविप की विकास यात्रा की चर्चा करते हुए संगठन मंत्री चौहान ने कहा कि अभाविप ने अपनी स्थापना के समय यह मांग उठाई थी कि हमारी राष्ट्र भाषा हिंदी होनी चाहिए, राष्ट्र गीत वंदे मातरम् होना चाहिए। कारण यह था कि अपने देश के लिए मौलिक चिंतन करना है तो वह उस भाषा में होना चाहिए जो भाषा एक बालक अपने बचपन से सीखता है। भारतीय परिवेश का जो मौलिक विचार-चिंतन है, उसे समाज के सभी स्तरों तक सहजता से पहुंचाने हेतु हिंदी भाषा का आंदोलन अभाविप ने खड़ा किया। हमारी यात्रा 'ध्येय यात्रा' है, यह घोषित है, किंतु हमारा उद्देश्य सभी को साथ लेकर चलना है और यही हमारी पारस्परिकता है। राष्ट्र हित के लिए जो भी निर्णय होगा, वह सभी मिल कर करेंगे। लेकिन अभाविप का उद्देश्य राज करना नहीं, बल्कि समाज बदलना है।

उन्होंने कहा कि 1962 में भारत-चीन युद्ध के दौरान जब दिल्ली की सत्ता ने अरुणाचल और असम की सुरक्षा को छोड़ दिया, तब देश के दूसरे कोने से अभाविप के एक प्राध्यापक पद्मनाभ आचार्य ने पूर्वोत्तर जाकर, वहां से 71 विद्यार्थी को लेकर 'माय होम इंडिया' के अंतर्गत उन्हें मुंबई लाए ताकि पूर्वोत्तर को यह नहीं लगने पाए कि सरकार ने सुरक्षा छोड़ दी है। सील का यह पहला कदम पूर्वोत्तर को अन्य भारत से जोड़ने वाली पहल की नींव सिद्ध हुआ। सील ने देश के बीच उत्पन संवादहीनता को समाप्त किया। उन्होंने कहा कि देश की एकात्मकता में सील प्रकल्प का विशेष योगदान है। पूर्वोत्तर के विद्यार्थियों को भारत के अन्य भागों से जोड़ने का कार्य परिषद ने किया है, जिससे उनके जीवन में बड़ा परिवर्तन आया। परिषद का सील प्रकल्प पांच दशक की अपनी विशेष यात्रा का गवाह है जो हमने भारत को जोड़ने के लिए शुरू की थी।

उन्होंने कहा कि दशकों-दशकों तक हमारा जुड़े रहना परस्परिकता है। अभाविप ने सूचना का अधिकार, अपनी भाषा में शिक्षा और वयस्क मताधिकार जैसे मुद्दों को उठाया, जिन्हें बाद में सरकार द्वारा स्वीकार किया गया। प्रा. यशवंत राव केलकर हमेशा कहते थे कि अभाविप समाज के सभी क्षेत्रों को नेतृत्व देने का काम करती है। अभाविप का यह सिद्धांत है और यही बानगी है कि यह नए और पुराने दोनों को साथ में लेकर चलता है। अभाविप की कार्यपद्धति प्रश्न से भागना नहीं, बल्कि उनका उत्तर देना सिखाती है। 1971 में अभाविप ने मतदान अधिकार के लिए आयु कम करने को लेकर आंदोलन शुरू किया और वह कार्य 1986 में पूरा हुआ। अभाविप दीर्घकालीन विचार कर आंदोलन तय करती हैं। आप अभाविप में किसी भी दायित्व में है, प्रश्न आपके पास बंदूक की गोली की तरह आएगा और आप उस प्रश्न से बचकर भाग नहीं सकते। कार्यकर्ता को डायरी के माध्यम से स्मृतियों से अभाविप जोड़े रखती हैं। 1968 में अभाविप का दायित्व लेने वाला कार्यकर्ता आज भी अपने को अभाविप से जुड़ा हुआ मानता है।

अभाविप की विकास यात्रा पर आधारित ध्येय यात्रा पुस्तक का उल्लेख करते हुए उन्होंने कहा कि यह केवल पुस्तक नहीं, बल्कि वह परिषद की जीवनी है। हमारी यात्रा ध्येय यात्रा है और यह घोषित है, किंतु हमारा उद्देश्य सभी को साथ लेकर चलना है और यही हमारी पारस्परिकता है। राष्ट्र हित के लिए जो भी निर्णय होगा, वह सभी मिल कर करेंगे। उन्होंने कहा कि विकासार्थ विद्यार्थी के माध्यम से हम दत्तोपंत ठेंगड़ी जी के उस विचार और चिंतन को आईआईटी परिसर तक लेकर जाते हैं, जो साम्यवाद और पूंजीवाद से भिन्न एक अलग विचार को पोषित करता है। अभाविप दीर्घकालीन विचार कर आंदोलन का निर्धारण करती हैं। कश्मीर फाइल्स को कर मुक्त करने पर जब प्रश्न उठा, उस समय अभाविप के कार्यकर्ता रहे हिमाचल के पूर्व मुख्यमंत्री जयराम ठाकुर ने कहा था कि वह फ़िल्म में दिखाए गए घटनाओं का साक्षी रहे हैं। इस फिल्म ने कश्मीर के पीड़ितों को आवाज देने का कार्य किया।

# अधिवेशन स्थल

अमृत महोत्सव

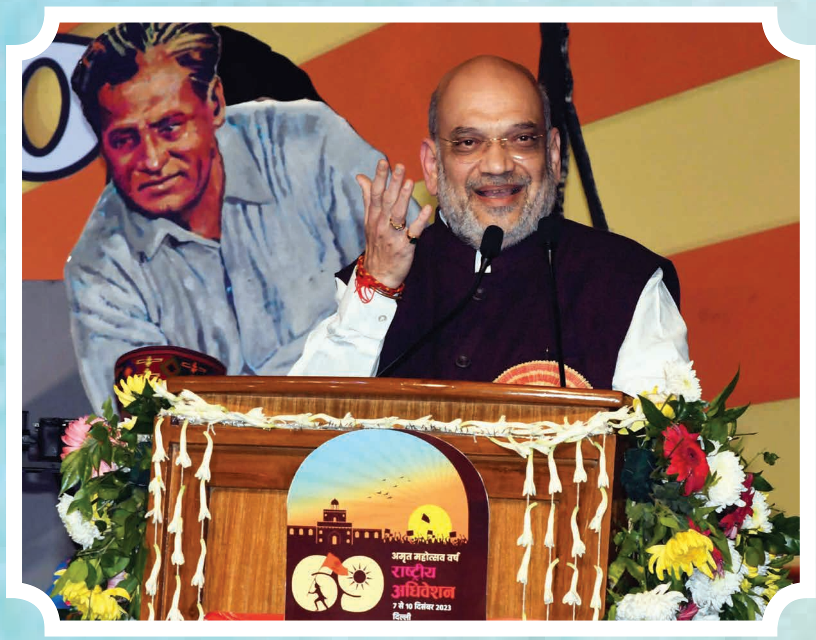
राष्ट्रीय
अधिवेशन

इंद्रप्रस्थ उद्घोष
"Satta Nahi, Samaj Badalna Hai"
वैचारिक अधिष्ठान

# ः झलकियां ...

छायाकार : चमन गौतम

# कृषि क्षेत्र से जुडी समस्याओं के निराकरण में जुटा है 'एग्रीविजन'

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की राष्ट्रीय कार्यकारी बैठक 2015 में महाराष्ट्र स्थित संभाजीनगर में हुईं थी। इस बैठक में कृषि छात्रों के बीच विशेष रूप से कार्य करने के उद्देश्य से 'एग्रीविजन' नाम से एक नए आयाम की शुरुआत की गई। यह आयाम आधुनिक भारत की आवश्यकताओं के अनुरूप कृषि की प्राचीनतम पद्धतियों का वैज्ञानिक परिमार्जन कर अधिकाधिक किसानों के बीच कृषि-कर्म को लोकप्रिय बनाने तथा उच्च शिक्षा प्राप्त कर रहे कृषि-छात्रों को शिक्षा पूर्ण करने के उपरांत व्यावसायिक रूप में अपनाने हेतु प्रेरित करने का प्रयास है।

एग्रीविजन के संयोजक शुभम सिंह पटेल ने राष्ट्रीय छात्रशक्ति से हुईं विशेष वार्ता में बताया कि यह आयाम कृषि से जुडी नीतियों को बनाने की दिशा में अपना योगदान करता है। इसके साथ ही कृषि क्षेत्र में स्नातक की शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थियों को व्यावसायिक रूप से सक्षम बनाने के लिए भी आयाम कार्य कर रहा है। शोध और विज्ञान के माध्यम से देश के कृषि क्षेत्र को विकसित करने और भारतीय कृषि को आधुनिक तकनीकी के उपयोग से कृषकों की आय को बढ़ाना हमारा लक्ष्य है। भारत के कृषि क्षेत्र में आधुनिक बदलाव के लिए पुरानी मानसिकता को बदलना अत्यंत आवश्यक है। इसीलिए हमारा आयाम कृषि क्षेत्र से सम्बंधित लोगों को नवीन मानसिकता के साथ कृषि में आधुनिक समयानुकूल बदलाव की प्रक्रिया के लिए भी कार्य कर रहा है। इसके अंतर्गत प्राचीन कृषि तकनीकी को उन्नत बनाना, कृषि से जुडी विधियों में आज के समय के अनुसार बदलाव, भण्डारण से जुडी समस्याओं का निराकरण एवं कृषि उत्पादों के विपणन की सटीक व्यवस्था इत्यादि शामिल है।

वह कहते है कि कृषि शिक्षा ग्रहण करने वाले विद्यार्थी कृषि-कार्य को स्व-रोजगार के रूप में भी अपनाएं, उन्हें इसमें सुगमता उपलब्ध हो, यह भी एग्रीविजन आयाम का एक प्रमुख उद्देश्य है। इसके साथ ही कृषि विश्वविद्यालयों में छात्रों का उत्साहवर्धन और वैचारिक दृष्टि से भारत के अनुकूल कार्य करने के लिए प्रेरित करने और कृषि को सम्मानजनक दृष्टि से देखने की दिशा में भी आयाम अपना कार्य सफलतापूर्वक कर रहा है। एग्रीविजन से अब तक सात हजार से अधिक लोग जुड़ चुके हैं और यह सभी अपने-अपने ढंग से कार्य कर रहे हैं।

वह कहते हैं कि दुर्भाग्य से भारत के किसानों की गलत छवि बनाई गई है और यह दर्शाया गया है कि कृषि कार्य एक ऐसा कार्य है, जिससे विकास करना संभव नहीं होता है। जबकि ऐसा नहीं है। कृषि एक लाभप्रद व्यवसाय है और इसके माध्यम से भी एक किसान उन्नति के शिखर को प्राप्त कर सकता है। यह देश की नई पीढ़ी को बताने और समझाने की प्रबल आवश्यकता है। हमारा उद्देश्य है कि कृषि छात्र अपनी शिक्षा पूरी करने के बाद सिर्फ नौकरी करने के स्थान पर अपना कार्य करने के लिए आगे आएं। वर्तमान समय में कृषि आंदोलन के नाम पर कुछ लोग कृषकों को बहकाकर अपने राजनीतिक हितों को पूरा करने की कोशिश करते आ रहे हैं। पर अब कृषकों को समझ आने में आना लगा हैं कि यह गलत है और इसके माध्यम से उन्हें कृषि क्षेत्र से दूर करने की कोशिश की जा रही है। इस दिशा में भी एग्रीविजन अपनी सकारात्मक भूमिका का निर्वहन करते हुए कृषकों को सही दिशा प्रदान करने का काम कर रहा है।

भारतीय कृषि क्षेत्र की समस्याओं से जुड़े प्रश्नों पर शुभम कहते हैं कि अमेरिका, आस्ट्रेलिया जैसे देशों में कृषि कार्य के लिए बड़ी-बड़ी मशीनों का प्रयोग किया जाता है, लेकिन भारत में अभी ऐसा नहीं हो पाता है क्योंकि यहां कृषि जोत कम है और अधिकतर कृषक बड़ी धनराशि खर्च करने में समर्थ नहीं हैं। भारत में कम खर्च पर कृषि कैसे हो? इसके लिए जागरूकता की आवश्यकता है। केंद्र में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार बनने के बाद कृषि क्षेत्र में समयानुकूल सुधार की प्रक्रिया प्रारम्भ हुई है। कृषकों को अब कृषि बीमा का लाभ मिल रहा है। मोटे अनाज (मिलेट्स) का उत्पादन बढ़ रहा है और इसकी मांग देश से लेकर विदेश तक लगातार बढ़ रही है। लेकिन अभी कृषि क्षेत्र में परिवहन की समस्या बनी हुई है। परिवहन की समस्या का समाधान करने के प्रयास किए जा रहे हैं। उम्मीद हैं आने वाले समय में कृषि उत्पादों के परिवहन की समस्या का पूर्ण रूप से समाधान हो जाएगा।

वह कहते हैं कि एग्रीविजन देश भर में मृदा, जल एवं वायु प्रदूषण के माध्यम से मनुष्य व अन्य जीवधारियों को हानि पहुंचाने वाले रासायनिक उर्वरकों, घातक कीटनाशकों के बजाय हानिरहित तथा अपेक्षाकृत कम लागत में तैयार होने वाली जैविक खेती को बढ़ावा देने पर भी एग्रीविजन जोर दे रहा है। आवश्यकता यह भी है कि कृषि विश्वविद्यालय के साथ ही स्कूली शिक्षा में भी कृषि शिक्षा को बढ़ावा दिया जाना चाहिए। साथ ही कृषि सम्बंधित शोध को बढ़ाया जाना चाहिए। कृषि शोध में अगर समयानुकूल सुधार किया जाए तो वस्तुस्थिति बेहतर होने में देर नहीं लगेगी।

## एक नजर

### नेत्रदान का संकल्प ले रहे हैं अभाविप कार्यकर्ता

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अलग-अलग राज्यों से आए अभविप कार्यकर्ता अपने-अपने राज्यों की संस्कृति को प्रदर्शित कर रहे हैं।

अधिवेशन स्थल पर जनता को जागरूक करने के लिए 'सक्षम'-समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मंडल द्वारा नेत्रदान जन-जागरण अभियान का शिविर लगाया गया है। सक्षम शिविर में उपस्थित कार्यकर्ताओं ने बताया कि उनकी संस्था नेत्रदान के साथ-साथ दिव्यांगता के लिए भी कार्य करती है। अधिवेशन के प्रथम दिन 31 से अधिक लोगों ने नेत्रदान का संकल्प लिया। नेत्रदान का संकल्प लेने वाले नरेंद्र सिंह एवं पुष्पेंद्र ठाकुर ने कहा कि उनकी मृत्यु के पश्चात यदि उनके नेत्र किसी जरूरतमंद के काम आते हैं तो वह स्वयं को गौरवंचित महसूस करेंगे। सक्षम के कार्यकर्ता आशुतोष एवं प्रदीप ने बताया कि समदृष्टि, क्षमता विकास एवं अनुसंधान मण्डल एक राष्ट्रीय संगठन है, जो दिव्यांगजन अधिकार कानून-2016 में उल्लखित समस्त 21 प्रकार की दिव्यांगता के क्षेत्र में कार्य कर रहा है। दिव्यांगता उन्मूलन एवं दिव्यांगता सशक्तिकरण के अपने उद्देश्य को पूर्ण करने के लिए सक्षम ने सात प्रकोष्ठों एवं सात आयामों की संरचना की है, जिसके माध्यम से दिव्यांगता जैसे गंभीर विषय में वैज्ञानिक ढंग से और योजनाबद्ध रूप में कार्य किया जा रहा रहा।

### तिहाड़ जेल के कैदियों के उत्पाद भी है अधिवेशन स्थल पर

अभाविप अधिवेशन स्थल पर दिल्ली के कारागार विभाग द्वारा संचालित एक स्टाल में तिहाड़ जेल के कैदियों द्वारा बनाए गए अनेक उत्पादों को रखा गया है। इन उत्पादों में बिस्कुट, लकड़ी से बने सामान, कुर्ते, शर्ट, चादर, खेस, तौलिया, कागज़ के बने थैले, फाइल कवर आदि शामिल हैं। स्टाल पर मौजूद कर्मचारियों ने बताया कि इन सभी वस्तुओं को बनाने के लिए जेल में लगभग ढाई सौ कैदी काम करते हैं। इनमें से दक्ष कैदी को 308 रुपए प्रतिदिन, अर्धकुशल कैदी को 265 रुपए प्रतिदिन और अकुशल कैदी को 194 रुपए प्रतिदिन दिए जाते हैं। तिहाड़ जेल में कैदियों द्वारा उत्पादन कार्य लगभग पिछले 37 वर्षों से चल रहा है। इस कार्य को कारागार महानिदेशक द्वारा संचालित किया जाता है। कैदियों को उत्पादन में लगाने के पीछे उद्देश्य यह होता है कि वह कार्य को सीख सकें और रिहा होने के बाद अपराध से दूर रहकर सम्मानपूर्वक अपना जीवनयापन करने में सक्षम हो। हाल ही में तिहाड़ जेल उत्पाद का प्रतीक चिन्ह बदला है और अब हर उत्पाद पर प्रतीक चिन्ह के रूप में 'टी-प्रोडक्ट' देखने को मिलेगा।

### अक्षरधाम मंदिर की अनुकृति के समान बना है मुख्य सभागार

अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में अक्षरधाम मंदिर की अनुकृति के समान मुख्य सभागार बनाया गया है। दिल्ली में स्थित अक्षरधाम मंदिर अपनी सुन्दरता और सांस्कृतिक महत्व के लिए जाना जाता हैI 2023 में अक्षरधाम मंदिर में ढाई करोड़ से अधिक दर्शनार्थी पहुंचे थे, जोकि एक रिकार्ड है। यह दर्शाता है कि अक्षरधाम मंदिर भारत और दुनिया भर के लोगों के लिए एक लोकप्रिय सांस्कृतिक स्थल बन चुका है। भारतीय संस्कृति और धर्म की एक महत्वपूर्ण विरासत अक्षरधाम मंदिर के आधार पर अधिवेशन स्थल में एक सभागार बनाया गया, जोकि सभी कार्यकर्ताओं को आकर्षित कर रहा है।

# सोशल मीडिया पर अभाविप की धमक

**अवनीश कुमार सिंह**

विश्व के सबसे बड़े छात्र संगठन अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की सोशल मीडिया पर मजबूत पकड़ है। सदस्यता का नया कीर्तिमान बनाने वाला यह छात्र संगठन सोशल मीडिया के एक्स, फेसबुक, इंस्टाग्राम, यू-ट्यूब, कू, शेयर चैट जैसे सभी सोशल प्लेटफार्म पर प्रभावी रुप से सक्रिय है। छात्रों में ही नहीं, बल्कि आम जन के बीच भी अभाविप के सोशल प्लेटफार्म की लोकप्रियता लगातार बढ़ती जा रही है।

सोशल मीडिया दुनिया भर के लोगों से जुड़ने का एक महत्त्वपूर्ण साधन है और इसने विश्व में संचार गतिविधियों को नया आयाम दिया है। अभाविप अपने संगठन की विचारधारा, आंदोलनों की उपयोगिता, विभिन्न आयामों की गतिविधियां, युवाओं को शिक्षा और रोजगार से संबंधित जानकारी प्रदान करने के साथ ही राष्ट्रीय एवं सामाजिक मुद्दों पर प्रतिक्रिया देने के लिए सोशल मीडिया का उपयोग कर अपने विचारों को अधिक से अधिक लोगों तक पहुंचा रहा है।

वर्तमान में पूरे विश्व में आम नागरिकों के बीच जागरूकता फैलाने के लिए सोशल मीडिया का प्रयोग काफी व्यापक स्तर पर किया जा रहा है। अगर आंकड़ों की बात करें तो अभाविप के एक्स प्लेटफार्म @ ABVPVoice पर 3 लाख 20 हजार से अधिक फालोअर हैं, वहीं फेसबुक पर यह संख्या लगभग 5 लाख 20 हजार पहुंच चुकी है। इसी तरह युवाओं के बीच लोकप्रिय सोशल साइट्स इंस्टाग्राम पर भी अभाविप के पौने तीन लाख फालोअर हैं।

सोशल मीडिया ने समाज के अंतिम छोर पर खड़े व्यक्ति को भी समाज की मुख्य धारा से जुड़ने और खुलकर अपने विचारों को अभिव्यक्त करने का अवसर दिया है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म पर अभाविप की मजबूत उपस्थिति का अंदाजा इस बात से भी लगाया जा सकता है कि पिछले एक वर्ष में दर्जनों बार अभाविप अपनी सकारात्मक पहल को लेकर एक्स की ट्रेंडिंग में शीर्ष पर रहा है। इस दौरान #ABVP75 #NyayPadYatra, #DUSU8434, #GondRaniDurgavati और #AakroshRally जैसे हैशटैग अभाविप कार्यकर्ताओं ने ट्रेंड कराए हैं।

सोशल मीडिया पर अभाविप के सभी प्रमुख पदाधिकारियों के साथ ही सभी प्रांतों के भी सत्यापित एक्स और फेसबुक हैंडल सक्रिय हैं। अधिवेशन स्थल पर मीडिया और सोशल मीडिया के लिए एक अलग पंडाल बनाया गया है, जिसका नाम विश्व के प्रथम पत्रकार महर्षि नारद के नाम पर रखा गया है। यहां 20 से 25 की संख्या में अभाविप कार्यकर्ता अधिवेशन की गतिविधियों को सोशल मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुंचा रहे हैं।

### सोशल मीडिया पर अभाविप की उपस्थिति आंकड़ों में

| | |
|---|---|
| | 5 लाख 19 हजार |
| | 3 लाख 20 हजार |
| | 2 लाख 70 हजार |
| Koo | 7 लाख 69 हजार |
| | 40 लाख 500 |
| ShareChat | 66 हजार 56 |
| | 21 हजार 400 |

## सोशल मीडिया से...

*विद्यार्थी परिषद के राष्ट्रीय अधिवेशन में सम्मिलित होने का अवसर प्राप्त होना सदैव गौरव एवं असीम आनंद का विषय होता है! अधिवेशन में राष्ट्र की युवा तरुणाई से मिलकर उसी ऊर्जा एवं जोश का रक्त प्रवाह होता है जो छात्र जीवन में होता था !*

*-प्रमोद मिश्रा, पूर्व कार्यकर्ता अभाविप*
*(@iampramodmishra)*

X

*राष्ट्रीय अधिवेशन में सम्मिलित होना सौभाग्य की बात है, चाहे वह 20 साल पहले विद्यार्थी काल मे प्रतिनिधि के नाते या फिर व्यवस्था कार्यकर्ता के नाते या अब पूर्व कार्यकर्ता के नाते। ध्येय की निष्ठा, स्थान की पवित्रता और काल की अनुकूलता पर आयोजित हर अधिवेशन वास्तव में परिषद के कार्यकर्ताओं के लिए केवल अधिवेशन नहीं बल्कि महायज्ञ ही होता है!*

*आतिफ रशीद, पूर्व कार्यकर्ता अभाविप*
*(@AtifRasheed80)*

X

*दिल्ली में आयोजित "अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद" के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन के उद्घाटन समारोह में सम्मिलित होकर युवा शक्ति के इस भव्य कुंभ का साक्षी बना। अधिवेशन में आए सभी प्रतिनिधियों को शुभकामनाएं।*

*-सुरेन्द्र सिंह नागर, राज्यसभा सांसद*
*(@surendrasnaagar)*

X

*आज इंद्रप्रस्थ नगर, दिल्ली में आयोजित अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद अमृत महोत्सव वर्ष के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन में केन्द्रीय गृह मंत्री माननीय श्री @AmitShah जी मुख्य अतिथि के रूप में सम्मिलित हुए। इस दौरान मुझे स्वागत कक्ष सचिव के रूप मे रहने का अवसर मिला।*

*-कर्म सिंह कर्मा, पूर्व भाजपा उपाध्यक्ष दिल्ली*
*(@karamsinghbjp1)*

X

*अभाविप के 69वें राष्ट्रीय अधिवेशन का विधिवत शुभारम्भ मा. केंद्रीय गृह मंत्री श्री अमितशाह जी, अभाविप राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रो. राजशरण शाही जी, राष्ट्रीय महामंत्री श्री याज्ञवल्क्य शुक्लजी एवं अन्य गणमान्यों द्वारा किया गया। इस दौरान संगठन के वरिष्ठजनों से सुखद भेंट हुई।*

*-दानिश आजाद, राज्यमंत्री उत्तर प्रदेश सरकार*
*(@danishazadbjp)*

# अधिवेशन स्थल: झलकियां ...

# अभाविप का लक्ष्य है राष्ट्रीय पुनर्निर्माण

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में छात्रों की शक्ति की रचनात्मक भूमिका के लक्ष्य को लेकर अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद (अभाविप) की स्थापना हुई। भारत की स्वाधीनता के तत्काल बाद ही छात्रों को संगाठित कर उन्हें राष्ट्र-शक्ति के रूप में पुनर्स्थापित करने के अभियान की शुरूआत के साथ अपनी संगठनात्मक विकास-यात्रा में अभाविप एक अलग प्रकार के छात्र-संगठन के रूप में प्रतिष्ठित हुआ है। अभाविप ने अब तक के स्वाभाविक विकास-क्रम में एक सुनिश्चित 'विचारधारा' के साथ एक विशिष्ट कार्य-पद्धति को जन्म दिया है। यद्यपि अभाविप की वैचारिक दिशा उसके उद्देश्यों में निहित थी, तथापि समय-समय पर इस संगठन के कार्यकर्ताओं की टोली ने अपने अधिवेशनों, अभ्यास वर्गों, कार्यसमिति की बैठकों तथा विचार-बैठकों के माध्यम से अभाविप के वैचारिक अधिष्ठान को स्पष्ट करते रहने और तदनुरूप संगठन-तंत्र खड़ा करने का प्रयत्न किया। परिणामस्वरूप आज अपने स्पष्ट वैचारिक अधिष्ठान पर खड़े इस छात्र-संगठन ने तदनुरूप अपनी कार्य-पद्धति विकसित की, वस्तुतः अभाविप का वैचारिक अधिष्ठान उसके इतिहास विकास का यात्रा-पथ है।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण अभाविप का अंतिम लक्ष्य है। अस्तु, राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में विद्यार्थियों को नियोजित करना ही अभाविप ने अपना प्रमुख कार्य माना। इस प्रकार अपनी स्थापना के समय से ही स्वाधीनता के बाद युगानुकूल भारत के पुनर्निर्माण में जुटकर 'राष्ट्र' की अवधारणा को स्वीकार किया। संगठन के जैविक विकास की प्रक्रिय में छात्र-समूह के संदर्भ में अपने मत प्रतिपादित किए और उन्हें अपने वैचारिक अधिष्ठान का हिस्सा बनाया। इस प्रकार भारतीय संस्कृति को आधार मान कर युगानुकूल सामाजिक परिवर्तन एवं राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के अभियान में यह छात्र-संगठन आज एक संगठन के आधार-स्तंभ के रूप में अपना वैचारिक अधिष्ठान विकसित कर चुका है। इस वैचारिक अधिष्ठान के उल्लेख के बिना इस छात्र-संगठन का विकास-क्रम समझा नहीं जा सकता।

राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का लक्ष्य लेकर कार्य करने वाले अभाविप के समक्ष 'राष्ट्र' की अवधारणा का चित्र स्पष्ट करना प्रमुख चुनौती थी। तत्कालीन विश्व में राष्ट्र, राज्य, देश और सभ्यता पर दुनिया के विद्वानों-चिंतकों और सामाजिक कार्यकर्ताओं के बीच अनेक मतभेद थे। पश्चिमी अवधारणा पश्चिमी देशों के अनुसार विकसित हुई थी और भारतीय मनीषियों की विकसित अवधारणा से उनका कोई मेल नही था। स्वाधीन भारत का राजनीतिक नेतृत्व भी राष्ट्र, राज्य, देश, संस्कृति, सभ्यता, धर्म आदि शब्दों की पश्चिमी अवधारणा से भ्रमित हुआ। तत्कालीन राष्ट्रीय विचारधारा के लोगों ने इस खतरे को महसूस किया। 'अभाविप' का जन्म भी इसी परिवेश में हुआ। अतः अभाविप ने राष्ट्र, राज्य, देश, संस्कृति, सभ्यता और धर्म की कोई नई परिभाषा नहीं प्रस्तुत की, अपितु वैभवशाली राष्ट्र के रूप में भारत को दुनिया के क्षितिज पर पुनः प्रतिष्ठित करना अपना लक्ष्य बनाया। अभाविप ने सांस्कृतिक राष्ट्र की अवधारणा पर आधारित भारत राष्ट्र का स्वरूप देश की युवा पीढ़ी के समक्ष प्रस्तुत करने के साथ ही अपनी विचारधारा का स्पष्ट चित्र रेखांकित करते हुए छात्र-छात्राओं के बीच अपने संगठनात्मक ढांचे का विस्तार किया।

भारत की पारंपरिक वैचारिकता के आधार पर अभाविप ने माना कि राष्ट्र और राज्य दो अलग-अलग सत्ताएं हैं, राष्ट्र एक जीवमान इकाई है। शताब्दियों के लंबे कालखण्ड में कोई राष्ट्र विकसित होता है। किसी निश्चित भू-भाग में निवास करने वाला मानव-समुदाय जब उस भूमि के साथ तादात्म्य का अनुभव करने लगता है, जीवन के विशिष्ट गुणों को आचरित करता हुआ समान परंपरा और महत्वाकांक्षाओं से युक्त होता है, सुख-दुःख की समान स्मृतियां और शत्रु-मित्र की अनुभूतियां प्राप्त कर परस्पर जुड़ता है तथा संगठित होकर अपने श्रेष्ठ जीवन-मूल्यों की स्थापना करता है, तब अपनी परंपरा का निर्वाह करने तथा उसे निरंतर विकसित करते रहने के लिए महान, तप, त्याग, परिश्रम करने वाले महापुरुषों की श्रृंखला निर्मित होती है और पृथ्वी के अन्यान्य मानव-समुदायों से भिन्न एक सांस्कृतिक जीवन प्रकट होता है। इसी भावात्मक स्वरूप को 'राष्ट्र' कहा जाता है। राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए 'राज्य' पैदा होता है। राज्य बदला जा सकता है। किंतु राष्ट्र की एक स्वयंभू सत्ता होती है, जिसे अल्पकाल में बदला नहीं जा सकता। राज्य नष्ट होने पर भी राष्ट्र विद्यमान रहता है। जिस प्रकार राष्ट्र की राज्य से भिन्न सत्ता है, उसी प्रकार राष्ट्र और देश भी एक नहीं है। निश्चित भूमि, जन, राज्य और संप्रभुता को मिला कर देश बनता है। तत्पश्चात, जब उस देश में एक जीवन-मूल्य आधारित संस्कृति विकसित होकर मानव-समुदाय को एक निश्चित पहचान प्रदान करती है, तब राष्ट्र-निर्माण की प्रक्रिया पूर्ण होती है।

कह सकते है कि देश एक दृश्यमान सत्ता है और राष्ट्र एक दृश्यमान, किंतु भावात्मक सत्ता है। दूसरे शब्दों में देश एक भौगोलिक इकाई है और राष्ट्र एक सांस्कृतिक इकाई है। वस्तुतः राष्ट्र का उत्पन्न होना एक लंबी सांस्कृतिक प्रक्रिया है। राष्ट्र से जिस समूह का बोध होता है, उसे 'एक-जन' कहते हैं। 'जन' की भी एक जीवंत सत्ता है, जो स्वयं विकसित होती है। राष्ट्र का स्वरूप इसी 'एक-जन' की परंपराओं, जीवन-मूल्यों एवं सामूहिक मूल प्रवृत्तियों द्वारा निर्धारित होता है। परिणामतः काल और परिस्थिति के अनुसार बाहरी ढाँचे में चाहे जो परिवर्तन होते रहें, किंतु राष्ट्र की मूल प्रकृति नहीं बदलती। वस्तुतः राष्ट्र भौतिक इकाई मात्र नहीं है। इसके लिए उस राष्ट्र में रहने वाले समाज के अंतः करण में उस भूमि के प्रति श्रद्धा की अनुभूति आवश्यक है। अनेक वर्षों तक एक देश में रहने तथा एक जीवन-पद्धति के आचरण से परस्पर साहचर्य एवं आत्मीयता का भाव उत्पन्न होता है और तब धीरे-धीरे राष्ट्र का इतिहास बनता है। उसकी एक विशिष्ट जीवन-दृष्टि विकसित होती है, परंपराओं का जन्म होता है, महापुरुषों की एक श्रृंखला बनती है और फिर राष्ट्रीय गौरव के प्रतीकों की प्रतिष्ठा होती है।

**राष्ट्र की आवश्यकताओं को पूर्ण करने के लिए 'राज्य' पैदा होता है। राज्य बदला जा सकता है। किंतु राष्ट्र की एक स्वयंभू सत्ता होती है, जिसे अल्पकाल में बदला नहीं जा सकता।**

भारत का इतिहास एक ऐसे ही राष्ट्र का इतिहास है। हमारे राष्ट्र का इतिहास ऋषि-मुनियों की साधना, तपशचर्या एवं त्यागमय जीवन और धर्म, अर्थ, काम एवं मोक्ष के पुरूषार्थ-चतुष्टय पर आधारित एक संपूर्ण-दृष्टि का इतिहास है। ज्ञान और विज्ञान, योग और उपभोग, लौकिक और पारलौकिक जीवन में समन्वय की जीवन-दृष्टि हमारी विशिष्टता है। हमारी भाषाएं विभिन्न हैं, उपासना पद्धतियां भिन्न-भिन्न हैं, वेश-भूषा एवं खान-पान में विविधता है, लेकिन भारतीय संस्कृति और हमारी जीवन-दृष्टि के मूल स्त्रोत एक ही हैं। परम्पराएं एक हैं, राष्ट्रीय जीवन एक है, महापुरुष एक हैं, मातृभूमि के प्रति अडिग श्रद्धा में एकरूपता है तथा भारतीय राष्ट्रीयता के बाहर हर नागरिक का ह्रदय अनेक समान आदर्शों एवं जीवन-मूल्यों पर एक समान झंकृत होता है। इस प्रकार भारत में राष्ट्र एवं राष्ट्रीयता का विचार कुछ सौ वर्षों का नहीं, अपितु सनातन काल से है। मानव-कल्याण के व्यापक और उदार जीवन-दर्शन के समग्र चिंतन के कारण यहां सामूहिक जीवन में एक समान अनुभूतियां उत्पन्न हुईं और इन्हीं सामूहिक अनुभूतियों की आधारशिला पर भारत का राष्ट्र-जीवन विकसित हुआ। अभाविप ने स्वीकार किया कि परस्पर संघर्ष, विद्वेष, प्रतिद्विद्विता के आधार पर प्रकट हो रही पश्चिमी संस्कृति की विभीषिकाओं से यदि विश्व को बचाना है तो भारत के सशक्त सांस्कृतिक राष्ट्रत्व को पुनः प्रतिष्ठित करना होगा।

अभाविप की सांस्कृतिक राष्ट्रीयता की वैचारिक प्रतिबद्धता पर प्रश्न खड़ा करने वालों ने सर्वाधिक प्रहार 'संस्कृति' की अवधारणा पर किया है। दुनिया के विद्वानों में भी 'संस्कृति' की अवधारणा पर मत-वैभिन्य व्याप्त है, तथापि अभाविप ने भारतीय संस्कृति के प्ररिप्रेक्ष्य में 'संस्कृति' की अवधारणा को स्वीकार किया है। हमारी धारणा है कि 'संस्कृति' मनुष्य के भूत, वर्तमान तथा भावी जीवन का अपने में पूर्ण विकसित रूप है। विचार और कर्म के क्षेत्रों में जो राष्ट्र की सृजन-प्रक्रिया है, वही उसकी संस्कृति है। संस्कृति मानव-जीवन की प्रेरणादायिनी शक्ति है। वह राष्ट्र की प्राणवायु है, जो उसके चैतन्य-भाव की साक्षी देती है। प्रत्येक राष्ट्र की दीर्घकालिक ऐतिहासिक गतिविधि का लोकहितकारी तत्व उसकी संस्कृति है। संस्कृति राष्ट्र-जीवन की आवश्यकता है, जो मानव-जीवन को अध्यात्म की ओर उन्मुख करती है। वास्तव में संस्कृति वह है, जो सूक्ष्म एवं स्थूल, मन एवं कर्म, आध्यात्मिक एवं भौतिक जीवन का सामंजस्य कर कल्याण करती है। संस्कृति व्यक्तिनिष्ठ न होकर अनेक व्यक्तियों अथवा समूहों द्वारा किया गया एक अनुभवसिद्ध बौद्धिक प्रयास है। भारतवर्ष भौगोलिक एवं सांस्कृतिक दृष्टि से एक राष्ट्र रहा है। अभाविप ने भारत की इसी सांस्कृतिक विशिष्टता पर आधारित सनातन काल से प्रतिष्ठित भारत राष्ट्र की एकता एवं अखंडता में अपनी पूरी निष्ठा व्यक्त करते हुए राष्ट्रीय पुनर्निर्माण का व्यापक लक्ष्य अपने सामने रखा। भारत हमारी मातृभूमि, पुण्यभूमि एवं कर्मभूमि है। अभाविप ने इसी वैचारिक भूमि पर देश की छात्र-शक्ति को राष्ट्र-शक्ति के रूप में प्रतिष्ठित करने का भगीरथ प्रयास प्रारंभ किया।

अभाविप ने 'सांस्कृतिक राष्ट्र' की उपर्युक्त अवधारणा को स्वीकार करते हुए यह माना कि भारत प्राचीनकाल से गौरवशाली राष्ट्र रहा है। अतः हमें राष्ट्र का नवनिर्माण न कर अपने राष्ट्र का ही पुनर्निर्माण करना है। वस्तुतः पूर्व वैदिककाल भारतीय संस्कृति के विकास का स्वर्ण-युग था। हमारे मनीषियों ने एक स्वस्थ समाज की रचना कर दुनिया की सर्वश्रेष्ठ संस्कृति विकसित की। कालांतर में विदेशी गुलामी एवं अन्य कारणों से अनेक विकृतियां आईं और भारत की शासन-व्यवस्था दीर्घकाल तक विदेशियों की राजसत्ता का गुलाम रही। सदियों की गुलामी के बाद जब 1947 में भारत ने ब्रिटिश सत्ता का जुआ अपने कंधे से उखाड़ फेंका और स्वतंत्र हुआ तो अवसर आया अपने गौरवशाली अतीत से प्रेरणा लेकर अपनी समूह-संस्कृति पर आधारित युगानुकूल, समर्थ एवं समृद्ध भारत को पुनः आत्मनिर्भर बनाने का। हमारी संस्कृति का एक वैश्विक लक्ष्य और नियति है, जो मनुष्य के मानवीय, सामाजिक, आध्यात्मिक, भौतिक आदि विविध पहलुओं का संतुलन सिखाती है। भारत में धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष के पुरुषार्थ-चतुष्टय पर आधारित एक विशिष्ट जीवन-दृष्टि विकसित रही है।

अभाविप ने तत्कालीन कुछ नेतृत्वकर्ताओं की इस बात को अस्वीकार कर दिया कि हमें किसी नए भारत का निर्माण करना है। अभाविप के संस्थापकों ने उसी समय यह कहा कि भारत सनातन काल से राष्ट्र रहा है और हम एक गौरवशाली एवं समृद्धिशाली संस्कृति के वाहक हैं। अतः 'पुरानी नींव-नया निर्माण' की वैचारिक पृष्ठभूमि में 'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण' हेतु देश की दिशा तय होनी चाहिए। स्वतंत्रता के बाद 'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण' का कार्य वस्तुतः सांस्कृतिक पुनर्जागरण का कार्य था। सदियों की दासता से मुक्त भारतीय समाज को संगठित कर भारतीय संस्कृति के जीवन-मूल्यों के प्रति आग्रही बनाना और 'सांस्कृतिक राष्ट्र-दर्शन' की विचार-भूमि पर 'एक राष्ट्र-एक जन-एक संस्कृति' के रूप में राष्ट्रीय एकता एवं अखंडता को अक्षुण्ण रखने का प्रयास 'राष्ट्रीय पुनर्निर्माण' का महत्वपूर्ण अंग था। युगानुकूल ज्ञान-विज्ञान के साथ भारत का भौतिक विकास इसका दूसरा पहलू था। स्वाभाविक ही भारत राष्ट्रीय समाज-जीवन के सभी पहलुओं को समेटे हुए है। अतः अभाविप ने स्वीकार किया कि ऐसा राष्ट्रीय पुनर्निर्माण व्यक्ति-निर्माण से ही संभव है, क्योंकि सद्गुणों, मूल्यबोध तथा मूल्याधारित आचरण से युक्त व्यक्ति ही सामाजिक परिवर्तन के सफल वाहक बनकर राष्ट्रीय पुनर्निर्माण के व्यापक संदर्भ में समग्र व्यवस्था-परिवर्तन कर सकते हैं।

(पुस्तक 'ध्येय यात्रा' के सम्पादित अंश)

DOWN THE MEMORY LANE

# Students have a role in National Reconstruction : Prof Bal Apte

**The ABVP is not a trade union of students against Theers and is above the partisan politics. We believe the students are not the citizen of tomorrow but a citizen of today. Therefore they have participatory role to play in the national life in all its aspects, said Prof Bal Apte, the former President of ABVP, while talking to a news weekly Excerpts:**

**How did you come in contact with the ABVP?**

A youth conference was organised by the ABVP in Pune some 35 years ago and I also participated in it. Since then I have been working as an activist holding different posts at different times. The Parishad's work is not position-oriented but responsibility-oriented. Therefore, while we function as a team some of us hold posts and some do not, which does not make any difference.

**What are the aims and objectives of the ABVP?**

The Vidyarathi Parishad is an organisation working in the field of education and it endeavours to organise the students with a wider national perspective. The basic approach of ABVP is therefore constructive and we believe in the first person approach. Ours is not a trade union of students against teachers or the management and it is above the partisan politics. Students, teachers, management and philosophers in education form one community. We work in all States and today the Parishad is the largest student organisation in the country with its membership touching 10 lakh this year. We believe the students are not the citizen of tomorrow but the citizen of today. Therefore they have a participatory role to play in the national life in all its aspects: social, political and economic. So we have motivated the students for the social changes.

**What are the social changes that you have brought about in the country?**

The social change occurs in two ways-one is in the attitude of the students, and the second is preparing them to work for national cause. We have inculcated social consciousness into them through various programmes, by which they remain committed to the cause of social equality- samajik samata and samarasata. Whenever efforts have been made by vested interests to divide the society on caste lines, the ABVP has risen to the occasion and foiled their efforts to create chaos and confusion among the people. For instance, during the regime of Shri V.P. Singh, when the recommendations of Mandal Commission were sought to be implemented, a deliberate attempt was made to divide the society. With the ABVP's attitude towards equality we did not permit our campuses to burn.

**But there is a criticism that you are trying to divide the society on religious lines.**

That is baseless. The paradox of the body politic of today is that the people are being divided in the name of secularism. This is the only country where minorities enjoy a privileged position through the Constitution and by the interpretations of the Supreme Court. People of this country were converted to Christianity or Islam but they belong to common ancestry. If they appreciate this, then no force on the earth can ever divide the society.

**How do you differentiate the ABVP from other student organisations?**

The basic difference is that other organisations are wings of one political party or the other, for whom these student organisations are their transmission lines, whereas the ABVP is not a branch of any political party but a genuine student organisation. The ABVP believes in year round constructive activities.